International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

लोकतंत्र के निर्माण में आम आदमी की भूमिका

प्रा.प्रकाश विट्ठल सोनवणे

सहाय्यक प्राध्यापक, श्री.पी.एल.श्रॉफ महाविद्यालय,चिंचनी

तहसिल-दहानू,जिला-पालघर, महाराष्ट्र-४०१४०३

लोकतंत्रीय व्यवस्था वह है जिसमें जनता की संप्रभुता हो | लोकतंत्र का अंग्रेजी पर्याय 'डेमोक्रेसी' मूल ग्रीक भाषा के 'डेमोस' तथा'क्रेशिया' से मिलकर बना है | जिसमे'डेमोस' का अर्थ लोग तथा'क्रेशिया' का तात्पर्य है शासन | अर्थात डेमोक्रेसी का अर्थ है लोगों का शासन | जनशासन ही लोकतंत्र है | जहाँ तक लोकतंत्र की परिभाषा का प्रश्न है अब्राहम लिंकन की परिभाषा -जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन प्रमाणित मानी जाती है | 'वाल्टरबेजहॉट' इसे वाद-विवाद द्वारा चलने वाली सरकार मानते है | प्रज्ञासुर्य डॉ.बाबासाहबआम्बेडकरअपनी परिभाषा देते हुए बताते है की ,लोकतंत्र ऐसी शासन व्यवस्था है जहाँ लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में बिना हिंसा के क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है | वह लोकतांत्रिक प्रक्रिया के द्वारा समाज में शांतिपूर्ण तरीके से लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में मूल परिवर्तन लाना चाहते थे | उनका मानना था की सामाजिकऔरआर्थिकलोकतंत्र के बिना राजनीतिक लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता क्योंकि राजनीतिक लोकतंत्र अपने आप में कोई साध्य नहीं है|उनका मुख्य उद्देश्य लोगों के लिए सामाजिक और आर्थिक समानता का आदर्श प्राप्त करना था |लोकतंत्र में जनता ही सताधारी होती है , उसकी अनुमति से शासन होता है ,उसकी प्रगति ही शासन का एकमात्र लक्ष्य माना जाता है | परंतुलोकतंत्र केवल एक विशिष्ट प्रकार कीशासन प्रणाली ही नही है बल्कि एक विशेष प्रकार के राजनीतिक संगठन, सामाजिक संगठन, आर्थिक व्यवस्था तथा एक नैतिकताका नाम भी है | लोकतंत्र जीवन का समग्र दर्शन है जिसकी व्यापक परिधि में मानव के सभी पहलू आ जाते है |सामाजिक आदर्श के रूप में लोकतंत्र वह समाज है जिसमें कोई विशेषाधिकारयुक्त वर्ग नहीं होता और न जाति,धर्म,वर्ण, वंश,धन, लिंग आदि के आधार पर व्यक्ति-व्यक्ति के बीच भेदभाव किया जाता है |

लोकतंत्र को पुरे विश्व में स्थापित करने के लिए मीडिया ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है | भारतीय मीडिया ने अखबार तथा रेडिओ से लेकर वर्तमान में टेलोवीजन और सोशल मीडिया तक का सफ़र तय किया है |संचार की जरुरत प्राचीन काल में भी थी और आधुनिक काल में भी है और आगे भी रहेगी| यह अलग बात है की समय में बदलाव के साथ-साथ तकनीक के विकास ने इसको कई प्रकारों में विभक्त

कर दिया है, पर मीडिया की जरुरत आज भी है और कल भी रहेगी | तकनीक वह चीज है जो एक समय बाद या तो खुद बदल जाती है या अपने साथ समेटे माध्यमों को भी बदलने के लिए विवश कर देती है | मीडियालोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है और यह समाज के आतंरिक वर्गों तक अपनी पहुँच से सरकारी नीतियों के न्याय और लाभ सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | वे सरकार और नागरिकों के बीच एक शृंखला के रूप में कार्य करते है | देश की पुरानी पीढ़ी कम-अधिक रूप में अभी भी परंपरा और संस्कृति के आधार पर चीजों को तय करती है ,जबकि वर्तमान युवाओं को विश्वमेंतेजी से बढ़ रहे प्रौधोगिकी और सोशल मीडिया में अधिक रूचि है |

आज लोगों के पास न तो घर पर समय है और न कार्यस्थल पर | ऐसे में यदि घर या कार्यालय पर काम के बीच थोडावक्त निकालकर ख़बरों से रूबरू होने या देश-दुनियाके हाल जाननेका साधन उपलब्ध हो तो यह लोगों के लिए अति उत्तम है | वैसे तो यहसारीविशेषताएं सोशल मीडिया में मौजूद है | ऐसे में लोगों के पास इससे उपयुक्त साधन और क्या हो सकता है कि काम के बीच में थोडा आराम ,थोडाटाइमपास तो थोडा देश-दुनियां की ख़बर | वैसे तो इसका भविष्य और अधिक पुख्ता इसलिय होता गया की जहाँ प्रिंट मीडिया में एक खबर के लिए कम से कम आठ और अधिकतम २४ घंटें तक समाचारोंके लिए इंतजार करना पड़ता था| इलेक्ट्रोनिक मीडिया में जहाँ समय को लेकर कोई पाबंदी नहीं है वही घर या ऑफिस में टीवीपर समाचार देखतें समय आप कोई गंभीर कार्य नहीं कर रहे होते है | समय के अनुकूल होने के चलते मीडिया का यह माध्यम ज्यादा कारगर साबित होता गया | सोशल मीडिया के आज सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष उजागर हो गए है | ज्ञान ,मनोरंजन,चैटिंग,ऑनलाइन बिजनस ,मित्रता की वृद्धि ,नयी -नयी जानकारी से अपडेट रहने के लिए आदि फायदों के साथ कुछ नकारात्मक पक्ष जैसे - धोखाधाडी,अफवा फैलाना,तुष्टिकरण की राजनीति ,प्रोपेगंडा फैलाना ,हैकिंग,मोबाईल अडिक्शन ,समय की बर्बादी ,वैयक्तिकडेटा लीक होना ,स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव ,दोस्तोंऔर परिवारों से दूर करना आदि का हम सब अनुभव कर रहे है |

आज देश - दुनियां के केंद्र में 'आम-आदमी' शब्द का ज्यादा प्रयोग होता दिख रहा है | सबसे बड़ा सवाल यह है की आम आदमी आखिर है कौन ? भारत में एक आम आदमी की असल में क्या परिभाषा है? क्या वह एक बी.पी.एलकार्ड की मुफ्तसुविधा लेनेवाला ? क्या वह अधिक अपत्य को पैदा करने वाला है ? क्या वह सरकारी खजाने पर बोझ सरकारी कर्मचारी है जिसकाप्राथमिक एवं अंतिम लक्ष्य ही 'भ्रष्ट - आचार' करना है | वह आम आदमी है जो दुनिया भर के टैक्स भरता है ? वह आम आदमी जो राजनीति करने वालों से परे आपना जीवन किसी भी हालत में जीने के लिए बाध्य है ? यावह जिसे गरीबी

,अशिक्षा,अभावग्रस्त जीवन विरासत में मिला हो ? इसकेउत्तर भी व्यक्तिनुरूप अलग -अलग आ सकते है | स्पष्ट रूप से कहे तो 'आम' वह जो 'ख़ास' वालों से परे अपने ही रूप में जीवनयापन कर रहा है |

आम आदमी को अभिव्यक्ति प्रदान कराने के लिए एवंन्याय दिलाने में सोशल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण साबित हो रही है | इसआधुनिक स्वरुप में उसकी जनांदोलनकारी भूमिका के साथ-साथ सामाजिक न्याय के प्रति आस्था व आवश्यकता भी कोई कम महत्व की बात नहीं है | वह आम आदमी अपने छोटे-छोटे सरोकारों से लेकर अंतर्राष्ट्रीय सरोकारों तक अपने को प्रभावित पाताहै वह उन पर अपनी राय देने लगा है | ऐसे अनेक छोटे -बड़े मुद्दों पर वह अपने मित्रों और परिचितों व साथियों से संवाद स्थापित करने लगा है | यूँ कहे तो आम आदमी को अभिव्यक्ति का बहुत बड़ा मंच सोशल मीडिया केआधार पर प्राप्त हुआ है | उसका उचित एवं अनुचित प्रयोग करना उसी के हाथ में है |

निष्कर्ष -लोकतंत्र के कारण ही हम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपभोग ले पा रहे है | लोकतंत्रही समता,समानता,बंधुत्वऔर न्याय स्थापित कर सकता है |समय के साथ-साथ जनसंचार माध्यमों,समाजऔर समाज की सबसे छोटी इकाई आम आदमी की भूमिका में भी अमूल-चूल परिवर्तन होते आ रहे है | परिणाम स्वरुप जनसंचार माध्यमों के केंद्र में आम आदमी की अहम् भूमिका मानी जाने लगी है| नव एलेक्ट्रोनिक मीडिया ने तो आम आदमी कोअभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम ही प्रदान किया है | परम्परागत माध्यमों की तुलना में वह बिना भय ,संकोचके अपने विचारों को बेहिचक रखने लगा है | लेकिन खेद इस बात का भी है की मीडिया शक्तिसंपन्न पूंजीपति ,राजनेता तथा व्यवस्था की गुलाम होता जा रहा है | जिसकेकारण उसकी निष्पक्षता पर भी प्रश्नचिन्ह निर्माण होने लगे है | मीडिया सही राह चले तो व्यक्ति ,समाज तथा मानवता की दिशा ,गति और रूप बदल दे | माध्यमों का काम है सूचना देना ,शिक्षित करना,तटस्थ होकर निष्पक्ष अपनी बात रखना तथा मनोरंजन करना |हम सब की जिम्मेदारी है लोकतंत्र को और अधिक मजबूत बनानेमेंअपना सही योगदान देना |

सन्दर्भ सूची :-

1. वाई.सोनटक्के,२०१२'बाबा साहेब डॉ.आंबेडकर के विचार' सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली
2. सुषमा यादव,२०१३'सामाजिक न्याय: आंबेडकरकी दृष्टी' वर्ल्ड फोकस,नई दिल्ली
3. विनोद खोब्रागडे,२०१३'आंबेडकर,सामाजिक न्याय और भारतीय संविधान' नई दिल्ली
4. मीडिया शासन और बाजार -अरविन्द मोहन ,वाग्देवीप्रकाशन, बीकानेर
5. इलेक्ट्रोनिक मीडिया लेखन -डॉ.हरीश अरोड़ा, के.के.पब्लिकेशन, नई दिल्ली